स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यासों में नारी

डॉ० संयुक्ता सिंह

गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी उपन्यास साहित्य में कई प्रकार के परिवर्तन आए। नर–नारी के प्रस्तुतीकरण का साँचा बदला। इन साँचों में समस्यात्मक, विश्लेषणात्मक, सुधारात्मक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक राजनीतिक आदि प्रकार के उपन्यास विशेष लिखे गए। इस काल में उपन्यासकार अपने उपन्यास में विवश व्यक्ति का सफलतापूर्वक चित्रण करते हुए जान पड़ते हैं।

आजादी के बाद नारी और नारी विषयक स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए। पहले पुरुष देवता के स्थान पर स्थित था और पत्नी उसकी दासी थी। वह उसे भोग की सामग्री समझता था। मनोरंजन का साधन समझता था। अपना आश्रित समझकर उसके साथ अवांछनीय व्यवहार करता था। प्राचीनकाल से ही नारी समर्पित नारी ही भारतीय आदर्शनारी की संज्ञा पाती रही। अतः इस आदर्श के नाम पर उसका शोषण पुरुषों द्वारा बराबर होता रहा। पुरुष समाज ने नारी के कर्त्तव्य की उपेक्षा भी बराबर की पर उसके अधिकारों और पुरुष के निहित स्वार्थों के कारण समाज की दृष्टि बहुत कम ही जा पाई सभ्यता के विकास क्रम में एक लम्बे काल से पुरुष शासित समाज का जो विकास हुआ उसमें नारी की उपेक्षा एक सीमा तक हुई कि वह बराबर पीछे घटती गई। इस प्रकार एक अस्वस्थ सामाजिक दृष्टि का विकास हुआ, जिसमें पुरुष द्वारा नारी को ठीक–ठीक समझने कोशिश नहीं हुई।[1]

उपन्यासकारों ने ऐसी आधुनिक नारी का निर्माण किया जो पुरुष की सहभागिनी हो तथा पुरुष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर जीवन क्षेत्र में सच्ची सहधर्मिणी बन सके। वह अपने आत्मबल के विकास पर अपना हक पा सके। इन उपन्यासों में आधुनिक पुरुष द्वारा रचे गए दोषपूर्ण सम्बन्धों को तोड़कर स्वस्थ सम्बन्धों का निर्माण कर रही है। इस युग की नारी पुरुष की समकक्षता प्राप्त कर रही है। वह पुरुष के ही केवल परिवार क सर्वशक्तिमान पुरुष नहीं मानती और न स्वयं को उसके इशारे पर चलने वाली कठपुतली, वरन् घर की व्यवस्था तथा निर्णय में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आधुनिक नारी से सम्बन्धित निम्नलिखित पंक्तियाँ दर्शनीय हैं– आधुनिक युग की नारी आत्मनिष्ठ और आत्मविश्वासी है। वह अपना हित अपनी बुद्धि द्वारा लिए गए निर्णय में देखती है। जीवन को अभिशप्त करनेवाली मान्यताओं और सीत्कारों से युक्त होना चाहती है।[2] पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव एवं राष्ट्रीय उत्थान की भावना ने उसमें नयी स्फूर्ति दी है। आर्थिक क्षेत्र की निर्भरता के कारण उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना हुई है, जिससे चिरकालीन स्वतंत्रता से मुक्ति की ओर उसका प्रयाण है।

उपन्यास मानव जीवन का पूरा नक्शा खड़ा करता है। इन उपन्यासों ने नारी पुरुष को अलग–अलग करके नहीं देखा वरन् नारी के संदर्भ में उतनी ही समझदारी से काम लिया। इन नारी चरित्रों में एक तो आधुनिक नारी और दूसरी अतिआदर्शवादी नारी। इस प्रकार स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में नारी का विशिष्ट

स्थान है। आज वह स्व की प्रतिष्ठा के मध्य अत्याचारों को नहीं सह सकती। भले ही उसका परिवार टूट जाय। शिक्षित नारी सुविधाओं के बावजूद मानसिक संतुष्टि के अभाव में पति के साथ समायोजन नहीं स्थापित कर पाती।

पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों में पलने के कारण उनके वैषम्य का आधार ग्रहण कर रही है। आज पत्नी के नये संबंध, अहं आपसी कटुता तथा तनाव की परिणति तलाक में भी प्रायः देखी जाती है। उदयशंकर भट्ट के उपन्यास सागर लहरें और मनुष्य, उन्होंने बरसेवा ग्राम की मछुवा और वोली जाति के जीवन संस्कारों तथा बदलते परिप्रेक्ष्यों को कथाबद्ध किया है। शिवदान सिंह चौहान के मतानुसार कहने को तो कहा जा सकता है कि (यह) बम्बई के मछुओं की कहानी है, यानी आंचलिक उपन्यास है, लेकिन वास्तव में यह उस लड़की रत्ना की कहानी है, जो पढ़ लिखकर परम्परागत मछुवा जीवन की विषमताओं और कुरूपताओं से विरक्त होकर सभ्य जीवन बिताने के लिए संघर्ष करती है।[3] इसमें कथानक का विभाजन रत्ना, माणिक, यशवन्त से जुड़ा है। बम्बई के निकट मछुवारों की बस्ती में रहने वाली लड़की रत्ना की शिक्षा बम्बई में हुई है। वह बार–बार माणिक से धोखा खाती है। विवाह के पूर्व के उसके सारे स्वप्न बिखर जाते हैं। अब वह अकेले रहने पर लोग उंगली उठाएँगे आदि बातों का कोई गम नहीं करती और नौकरी करने का फैसला करती है। वह अपने सम्मान, इज्जत की रक्षा के लिए अपने जीवन के उतार चढ़ावों के प्रति बेफिक्र हो जाती है। इस उपन्यास द्वारा नारी को सम्मान से जीने का सही रास्ता दिखाया गया है। साथ ही परोक्ष रूप से पुरुष वर्ग द्वारा नारियों पर सदियों से होते आए अत्याचार और शोषण को भी प्रस्तुत किया गया है। आगे वह सेवा द्वारा डॉक्टर को प्रभावित करती है और डॉक्टर की पत्नी, नर्स से बन जाती है। अतः इस उपन्यास की यह शिक्षा है कि नारी सेवा की मूर्ति होती है और यही सेवा भावना उसकी सबसे बड़ी शक्ति है जिसके बल पर वह पुरुष पर अधिकार करती है।[4]

आधुनिक नारी पुरुष के स्वेच्छाचारी व्यवहार को नहीं सहन कर पाती। भावात्मक एक क्षणता के अभाव में पति–पत्नी के बीच संघर्ष पैदा हो जाता है। "आपका बंटी" उपन्यास की नारी पात्र शकुन पति द्वारा उपेक्षित किए जाने पर उसका अहं फूत्कार कर उठता है और प्रतिशोध की भावना से मर जाने पर एक अन्य पुरुष डॉ० को अपना जीवन साथी बनाती है। "वैसाखियों वाली इमारत" की पत्नी मूक रहकर पति की उपेक्षा नहीं सहती वरन् अधिकार भाव को प्रतिष्ठित करने वाली एक सजग आधुनिका की भाँति है। उसके पति का कई लड़कियों से गलत सम्बन्ध होता है परन्तु अपनी नारी के समक्ष वह राम रूप में ही रहता है। बाद में जब उसकी चालों को जो वास्तविक प्रेम का स्वांग कर रहा था असलियत का पता चल जाता है। तो वह पति को फटकारते हुए कहती है– "आप घर को धर्मशाला समझ सकते हैं।"[5] बीबी को वेश्या नहीं समझ सकते। वह कहती है कि मैं इसीलिए घर में रहती हूँ कि फर्नीचर की तरह जड़ बनी रहूँ और साहब जन आयें तो उस पर बैठकर आराम फरमाने लगें।[6] इस प्रकार उसके चरित्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन होते हैं और अपने स्वाभिमान के कारण पति को हमेशा के लिए छोड़ आती है।

इस प्रकार की स्थिति अनेक उपन्यासों में दिखाई गई है जिसमें पति की दुश्चरित्रता नारी को ऐसा करने और सोचने को बाध्य कर देती है। इस दृष्टि से श्फागुन के दिन चारश सारा आकाश, उल्टी गंगा, बूँद और समुद्र आदि अनेक उपन्यासों को देखने–परखने के बाद यह निष्कर्ष हाथ लगता है कि मनुष्यता की

स्थापना में नारी और पुरुष दोनों का सहयोग आत्मस्तर पर होना जरूरी है। कोई कल्मषता अपने भीतर नहीं रखकर पारस्परिक सहनशीलता के आधार पर नाते को पुष्ट करते हुए समान पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए। स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यासों में दोनों स्थितियों को दिखाकर संतुलित दृष्टि की अपेक्षा की गई है।

सन्दर्भ सूचीः

1. डॉ० त्रिभुवन सिंह :– उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 193
2. चन्डीप्रसाद जोशी :– हिन्दी उपन्यास समाज शास्त्रीय विवेचन पृ. 306
3. डॉ० स्वर्णलता :– स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि पृ. 249
4. सागर लहरें और मनुष्य पृ. – 222
5. सागर लहरें और मनुष्य पृ. – 221
6. वैसाखियों वाली इमारत – रमेशवक्षी पृ. – 50
7. उपरिवत् पृ. 50

•••••